

0.09 / 40

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

कार्यालयीन उपयोग के लिए

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील

हाई स्कूल परीक्षा 2008



1. विषय कोड 900 परीक्षा का विषय विज्ञान

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 17.03.09

केन्द्र क्रमांक की सील
केन्द्राध्यक्ष
केन्द्र क्र०- 351010

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर कोड सेट
(सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें T-1034 A
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर -

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में अंकों में
ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 9 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

5619478
परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)
1 9 3 5 1 9 0 0 9
एक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को अंग्रेजी अक्षरों में लिखा जाए :-
1 9 3 5 1 9 0 0 9
BOARD OF SECONDARY EDUCATION, BHOPAL
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्य प्रदेश, भोपाल

B
S
E
M
P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) [Signature]
नाम [Signature] पद [Signature]
पता/संस्था [Signature]

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

- 1
- 2
- 3
- 4
- 5
- 6
- 7
- 8
- 9
- 10
- कुल
- प्राप्तांक

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तरपुस्तिकाओं व चप्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया। पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कक्षर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान हैं।

हस्ताक्षर (परीक्षक) [Signature]
परीक्षक क्रमांक 62023

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) [Signature]
दिनांक

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक) [Signature]
दिनांक 26/3/09

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कवर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

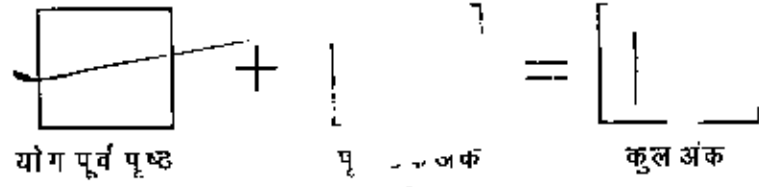
परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौंपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौंपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



प्रश्न क्रमांक - 01

(अ) :-

- (i) पृथ्वी के क्रीड की त्रिज्या 3480 कि.मी. है।
- (ii) सिकुड़ता हुआ घना गैस पिण्ड आर्दितारा (प्लेनियट) कहलाता है।
- जोवियन समूह का प्रथम खनिज बृहस्पति (जुपिटर) है।
- शनि के प्राकृतिक उपग्रहों (चंद्रमाओं) की संख्या 30 है।
- सूर्य के नाभिक में हाइड्रोजन एवं हीलियम जैसे

B
S
E
M
P

(ब) :-

- (i) न्यूट्रोफिल → (iv) श्वेत कणिका
- (ii) द्रव धातु → (1) पारा
- (iii) फाइब्रिनोजन → (2) शर्करा चक्का
- यकृत → (3) यूरिया का निर्माण
- पीयूष → (5) मास्टर ग्रंथि

प्रश्न क्रमांक - 02

(अ) :-

- (i) जब आपतित किरण विरल माध्यम से घन माध्यम में प्रवेश करती है तो वह अभिलंब है।

पृष्ठ क्रमांक



उत्तर: (b) पास: का: जती है

(ii) विद्युत शक्ति का अंतरराष्ट्रीय पद्धति में मात्रक है :-

उत्तर: (b) वाट

(iii) कलब पदार्थ (घटपणी) पौधा है :-

उत्तर: (d) कीटमक्षी

(iv) समुद्री के तैल में रखी जाने वाली धातु है :-

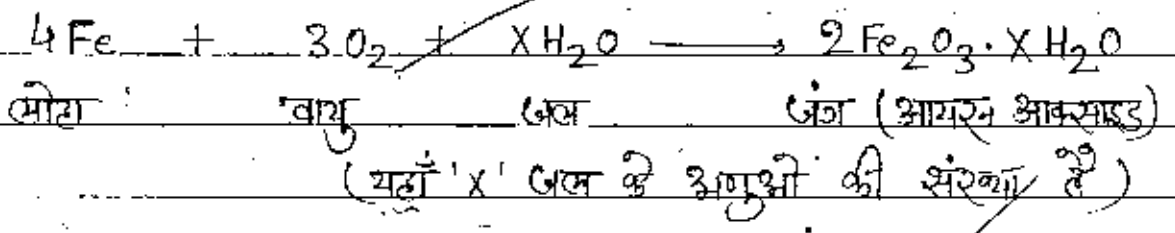
(c) सोडियम

रक्तस्र्ण क्रिया होती है :-

(b) ऑक्सीकरण

(b) :-

(i) लोहे पर जंग लगना में रासायनिक क्रिया है



(ii) शुद्ध जल का pH मान 7 होता है।

(iii) प्रिज्म से निर्मित वर्णक्रम :- (नीले से ऊपर की ओर)
बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी, लाल

5



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ संकेतक

कुल अंक

(17)

आकाशीय पिण्ड देखने में आकाशीय या खगोलीय दूर-दर्शी का उपयोग करते हैं।

(18)

किन्हीं दो विभवों के बीच का अंतर विभवान्तर कहलाता है।

खण्ड - 'ब'

प्रश्न क्रमांक - 03

B
S
E
M
P

(i)

रासायनिक अभिक्रिया की प्रभावित करने वाले कारक :-
अभिकारकों का सांद्रण :- अभिकारकों का सांद्रण बढ़ाने से अभिक्रिया दर तीव्र हो जाती है।

(ii)

तापमान :- प्रायः तापमान में वृद्धि करने से अभिक्रिया की दर भी बढ़ती है। क्योंकि इससे अभिकारकों की गतिज ऊर्जा बढ़ जाती है, जिससे उनमें होने वाला परस्पर टक्कर टकराव भी बढ़ जाता है।

(iii)

उत्प्रेरक :- उत्प्रेरक स्वयं अभिक्रिया में भाग नहीं लेते किन्तु अपनी उपस्थिति में अभिक्रिया की दर को परिवर्तित कर देते हैं। धनात्मक उत्प्रेरक अभिक्रिया की दर बढ़ाते हैं जबकि ऋणात्मक उत्प्रेरक दर को घटा देते हैं।

(iv)

अभिकारकों की प्रकृति :- अधिक क्रियाशील पदार्थ तेजी से अभिक्रिया करते हैं, जबकि कम

6



पुल अंक

क्रियाशील पदार्थ द्वारा जाति से अभिक्रिया करते हैं।
 प्रायः आयनिक यौगिकों की अभिक्रिया दर तीव्र रहती है।
 तथा : सह-संयोजी यौगिकों की क्रिया दर धीमी रहती है।

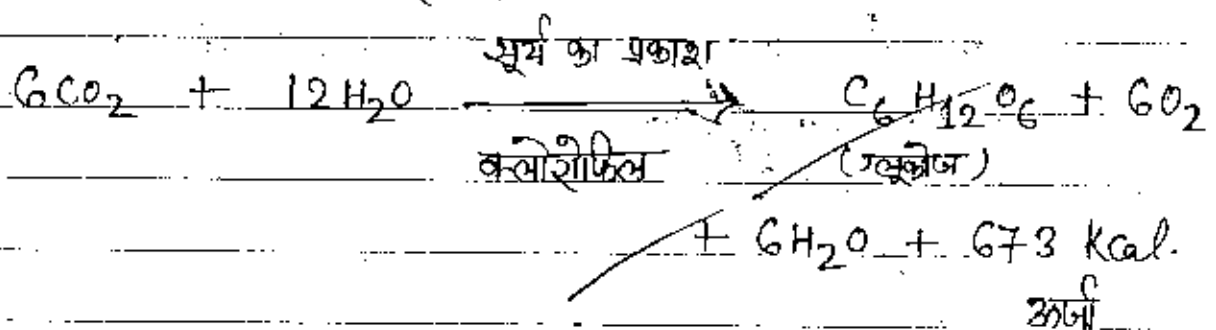
प्रश्न क्रमांक - 04

प्रकाश संश्लेषण :-

शमी हर पौधे क्लोरोफिल (हरितद्रव्य) पाए जाने के कारण अपना भोजन स्वयं बनाते हैं। भोजन बनाने की यह क्रिया प्रकाश-संश्लेषण कहलाती है।
 अर्थात् :-

प्रकाश संश्लेषण एक उपापचयी क्रिया है जिसके अंतर्गत हर पौधे सूर्य-प्रकाश एवं क्लोरोफिल की उपस्थिति में जल एवं कार्बन डाइ-ऑक्साइड के द्वारा कार्बोहाइड्रेट (भोज्य पदार्थ) का निर्माण करते हैं तथा ऑक्सीजन जैसे सह-उत्पाद के रूप में निकालते हैं।

अभिक्रिया का समीकरण :-



B
S
E
M
P



- प्रकाश संश्लेषण
- जल रासायनिक क्रिया है।
- इसमें जल का ऑक्सीकरण होता है।
- $C_6H_{12}O_6$ का अपचयन होता है।

प्रश्न क्रमांक - ०९

B
S
E
N
E

	लामनी	श्रीश
(i)	इसकी भ्रिती मोटी एवं अचीली होती है।	(i) इसकी भ्रिती पतली एवं अचीली होती है।
(ii)	इसकी गुहिका सँकरी होती है।	(ii) इसकी गुहिका चौड़ी होती है।
(iii)	यह अशुद्ध रक्त का परिवहन करती है अतः लाल रंग की दिखाई देती है।	(iii) यह शुद्ध रक्त का परिवहन करती है अतः नीले रंग की दिखाई देती है।
	यह रक्त को हृदय से शरीर के विभिन्न भागों तक ले जाती है।	(iv) यह विभिन्न भागों से रक्त को हृदय तक लाती है।
(v)	इसमें कपाट नहीं पाए जाते।	(v) इसमें कपाट पाए जाते हैं।
	इनका आयतन परिवर्तित नहीं होता है।	(vi) इसका आयतन परिवर्तित होता रहता है।
	अधमनियों में रक्त श्लाथिक दाब पर रुक-रुककर प्रवाहित होता है।	(vii) इनमें रक्त कम दाब पर निरंतर चाली गति से प्रवाहित होता है।

8

योग पृ. ४

+

पृष्ठ 8



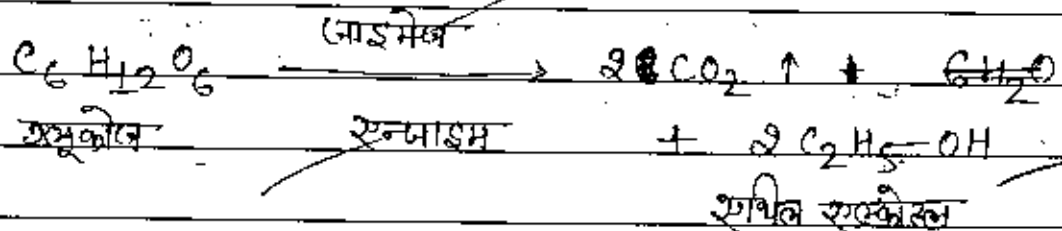
प्रश्न क्रमांक - 06

(1) किठवन :- किसी कार्बनिक यौगिक का अणुसंयोजन की उपस्थिति में धीरे-धीरे शरत् कार्बनिक पदार्थों में अपघटन किठवन

प्रश्न क्रमांक - 06

(1) किठवन :- वह रासायनिक अभिक्रिया, जिसमें जटिल कार्बनिक यौगिक, अणुसंयोजन की उपस्थिति में शरत् पदार्थों में बिना परिवर्तित हो जाते हैं, किठवन कहलाती है।

उदा० :- जूकोब का अपघटन एक किठवन क्रिया है।



(2) एस्टरीकरण :- शर्करा अणुसंयोजन को जब सांद्र H_2SO_4 की उपस्थिति में एस्टरीक नामक के साथ गर्म किया जाता है शर्करा एस्टर (एस्टर) बनता है, जिसकी गंध फलों के समान मधुर होती है। इस क्रिया को ही एस्टरीकरण कहते हैं।



पृष्ठ के अंकों का योग

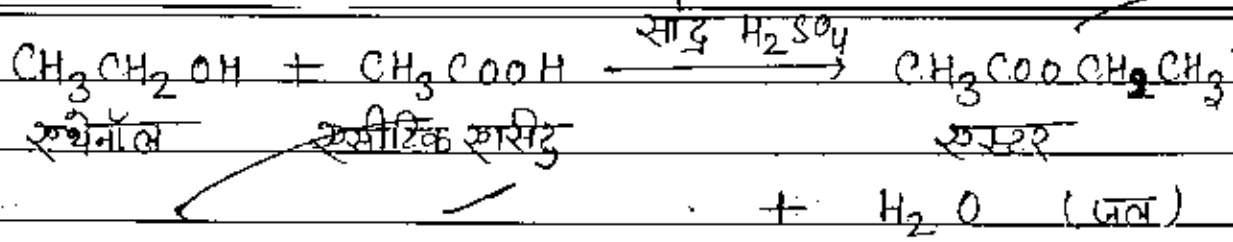
B
S
E
M
P

9

योग

पृष्ठ 9 के अंक

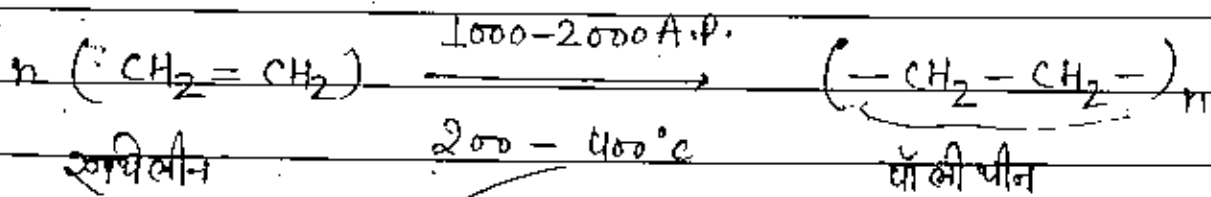
कुल अंक



प्रश्न क्रमांक - 07

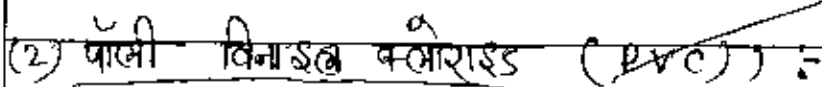
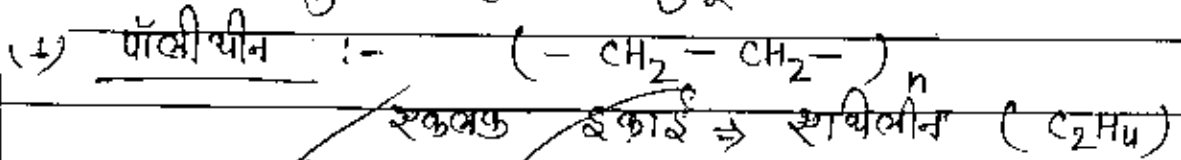
बहुलक :- निम्न अणुभार वाले समान या असमान अणुओं से संयोग से जब उच्च अणुभार वाले शैविक प्राप्त होते हैं तो उन्हें बहुलक कहते हैं तथा इस क्रिया को बहुलीकरण कहते हैं।

उदाहरण :- जब एथिलीन को उच्च ताप एवं उच्च दाब पर गर्म किया जाता है तो उसके अणु परस्पर संयुक्त होकर पॉलीथीन नामक बहुलक बनाते हैं।

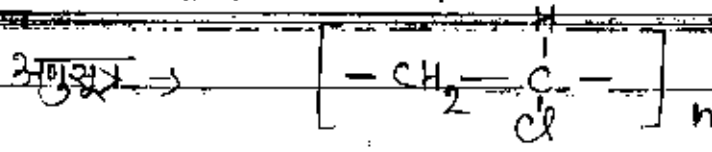


यहाँ n = अणुओं की संख्या

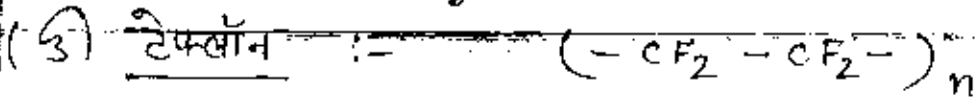
तीन बहुलक एवं अणुसूत्र :-



B
S
E
M
P



एकलक इकाई \Rightarrow विनाइल क्लोराइड $(\text{CH}_2=\text{CH}\cdot\text{Cl})$



एकलक इकाई $:=$ टेट्रा फ्लोरो एथीन $(\text{CF}_2=\text{CF}_2)$

प्रश्न क्रमांक - 08

ग्रीन हाउस प्रभाव :-

कार्बनडाइऑक्साइड, मीथेन, क्लोरो फ्लोरो कार्बन तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड को ग्रीन हाउस गैसें कहते हैं। ये गैसें वायु में पृथ्वी एवं वायुमण्डल के बीच एक पारदर्शी कच के समान परत बना लेती हैं। यह परत सूर्य से निकलने वाली ऊष्मा (अवरक्त किरणें) जिनकी तरंगदैर्घ्य छोटी है, के लिए पारदर्शी होती हैं। किन्तु पृथ्वी द्वारा विकीर्ण की गई तरंगदैर्घ्य वाली अवरक्त किरणों के लिए अपारगम्य होती हैं। और ऊष्मा को बाहर नहीं देती। इससे कच के अंदर का तापमान बढ़ने लगता है। इसे "ग्रीन हाउस प्रभाव" कहते हैं।

यह प्रभाव प्रदर्शित करने हेतु

B
S
E
M
P

(11)

+

=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 11 के अंक

हंड प्रदिशी में काँच के घर बनाए जाते हैं, जि
 में पौधे लगे होते हैं। यहाँ काँच की दीवार
 ग्रीन हाउस परत के समान कार्य करती हैं, जिससे
 घर के अंदर का तापमान बढ़ जाता है। और
 पौधों को प्रकाश संश्लेषण हेतु उचित तापक्रम प्राप्त
 होता है।

किन्तु पर्यावरण की दृष्टि से यह
 प्रभाव हानिकारक है क्योंकि इससे ग्लोबल वार्मिंग
 बढ़ रही है।

L
S
E
M
P

प्रश्न क्रमांक - 09

औषधीय पौधे :- ऐसे पौधे, जिनमें महत्वपूर्ण
 औषधीय गुण होते हैं तथा जो विभिन्न
 स्वास्थ्य - विकारों में लाभप्रद होते हैं, औषधीय
 पौधे कहलाते हैं।
 मौसमी औषधीय पौधे :-

(1) तुलसी :-
 → इसकी पत्तियाँ अनेक संश्लेषण होती हैं।
 → पत्तियों का उपयोग सर्दी - जुकाम, खाँसी, लकवा,
 जोड़ी के दर्द एवं आमाशयिक रोगों में होता
 है।

(2) लहसुन :-
 → हृदय रोग एवं मूत्र रोग में उपयोगी।

12

योग पूर्व पृष् = कुल अंक



→ आमशायिक रोगों में उपयोगी ।

→ पसा कम करता है ।

(3) अदरक :-

→ इसका अधिकतम स्तंभ उत्तेजक सुगंधीय होता है ।

→ खरी-पुष्प, कफ, सिरदर्द एवं मूर्च्छा भाने पर उपयोगी ।

→ आमशायिक रोग, ठंडी होने पर उपयोगी एवं पाचकीय उत्तेजक ।

(4) हल्दी :-

→ इसकी जड़ में औषधीय गुण होते हैं ।

→ एंटीसेप्टिक, प्रतिरक्षा के रूप में उपयोगी ।

प्रश्न क्रमांक - 10

दूरदृष्टि दोष :- इस नेत्रदोष में व्यक्ति को दूर की वस्तुएं स्पष्ट दिखाई देती हैं किन्तु निकट की वस्तुएं स्पष्ट नहीं दिखाई देती ।

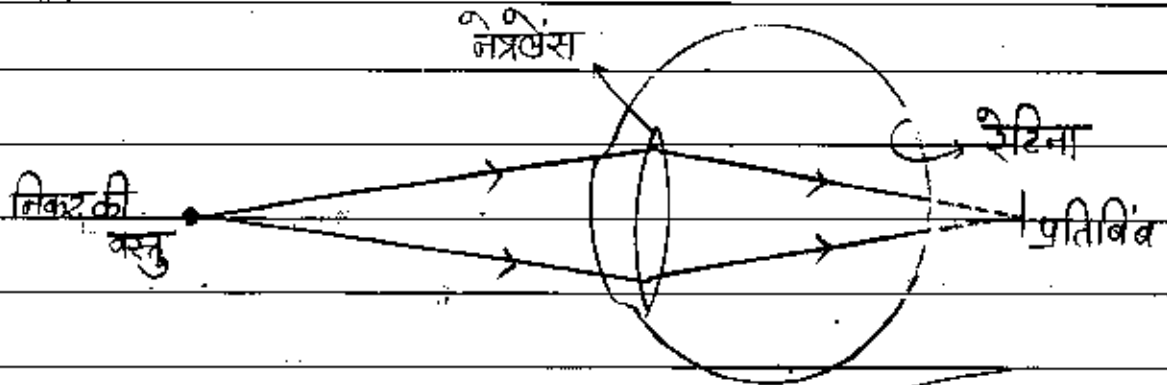
कारण :-

(1) लेंस से रेटिना तक की दूरी बढ़ जाए अर्थात् नेत्र गोलों की प्रिप्या कम हो जाए ।

(2) नेत्रलेंस पतला हो जाए या उसकी पक्का कम हो जाए जिससे उसकी फोकस दूरी बढ़ जाती है ।
दोनों ही स्थितियों में निकटस्थ वस्तु का प्रतिबिंब रेटिना के पीछे बनता है ।

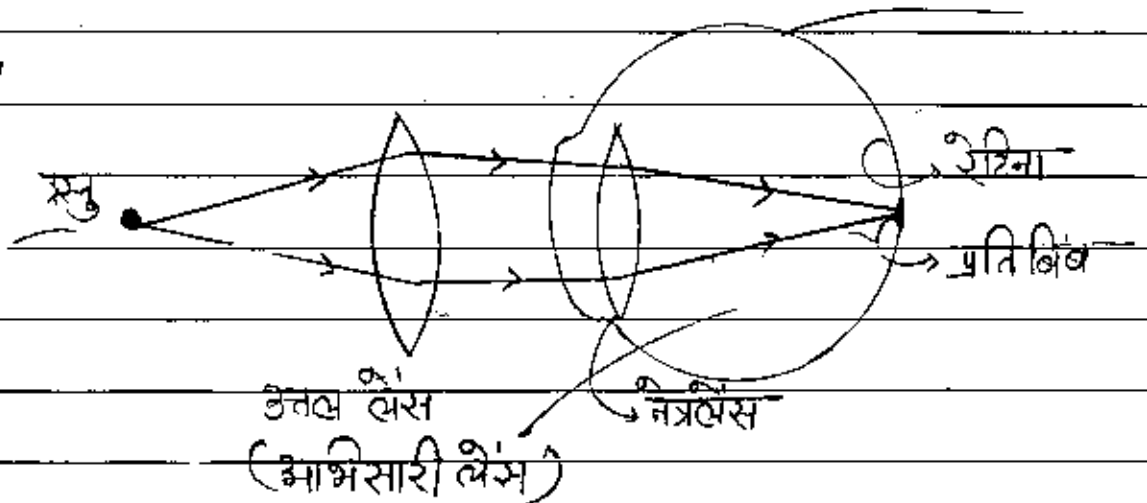
B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंक : 10



दूर दृष्टि दोष →

निवारण :- इस दोष का निवारण उत्तल लेंस के चश्मे लगा कर किया जाता है। जो कि नेत्रलेंस की आभिसारी प्रकृति को कम करके प्रकाश किरणों को ठीक प्रकार से रेटिना पर केन्द्रित करता है।



दूर दृष्टि दोष का निवारण

B
S
E
M
P



प्रश्न क्रमांक - 11

आदर्श ईंधन :-

- एक आदर्श ईंधन वह होता है जो घर एवं उद्योगों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है। आदर्श के प्रमुख लक्षण निम्न हैं :-
- (1) आदर्श ईंधन का ऊष्मीय मान अधिक होता है तथा ज्वलन ताप भी उचित होता है।
- (2) ईंधन में अज्वलनशील पदार्थों की मात्रा कम होती है तथा उसकी दहन-दर संतुलित होती है।
- (3) ज्वलते समय धुँआ नहीं होता तथा इससे अधिक प्रदूषण भी नहीं होता है।
- (4) ईंधन के दहन के पश्चात् शेष या अव्यक्त कोई विशेष पदार्थ नहीं बचता है।
- (5) ईंधन का परिवहन एवं भण्डारण आसान एवं सुरक्षित होता है। नियंत्रण भी आसान होता है।
- (6) ईंधन की उपलब्धता पर्याप्त सुलभ एवं सस्ती होनी चाहिए।

B

M
P

प्रश्न क्रमांक - 12

मैण्डल के अनुवांशिकता के नियम :-

- (1) प्रथम प्रभावित का नियम :- मैण्डल ने जीवों के बतलाया कि यदि जीवों के एक जीव



योग पूर्व
नियम कहते हैं।

(3) स्वतंत्र अपव्यूहन का नियम :- मेण्डल ने मटर के दो जैसी विपरीत लक्षणों के मध्य पर-पराग्रह (द्वि-संकर क्रॉस) कराया और बताया कि, जीवों के लक्षण एक दूसरे को प्रभावित किए बिना स्वतंत्र स्वतंत्र रूप से गुणकों या सन्ततियों में जाते हैं। अतः लक्षणों का पृथक्करण स्वतंत्र रूप से होता है अर्थात् एक लक्षण की वंशागति दूसरे लक्षण को प्रभावित नहीं करती है। इसी ही स्वतंत्र अपव्यूहन का नियम कहते हैं।

प्रश्न क्रमांक - 13

विद्युत लेपन :- विद्युत लेपन, विद्युत अपघटन के सिद्धान्त पर आधारित प्रक्रिया है, जिस में विद्युत धारा के रासायनिक प्रभाव द्वारा एक धातु की सतह पर, किसी अन्य धातु की पतली परत चढ़ा दी जाती है।

लोहे के पात्र पर तँबे का लेपन :- सर्वप्रथम एक पात्र में कॉपर सल्फेट (नीला घोल) का विलयन भर लेते हैं, जो विद्युत अपघटन का कार्य करता है।

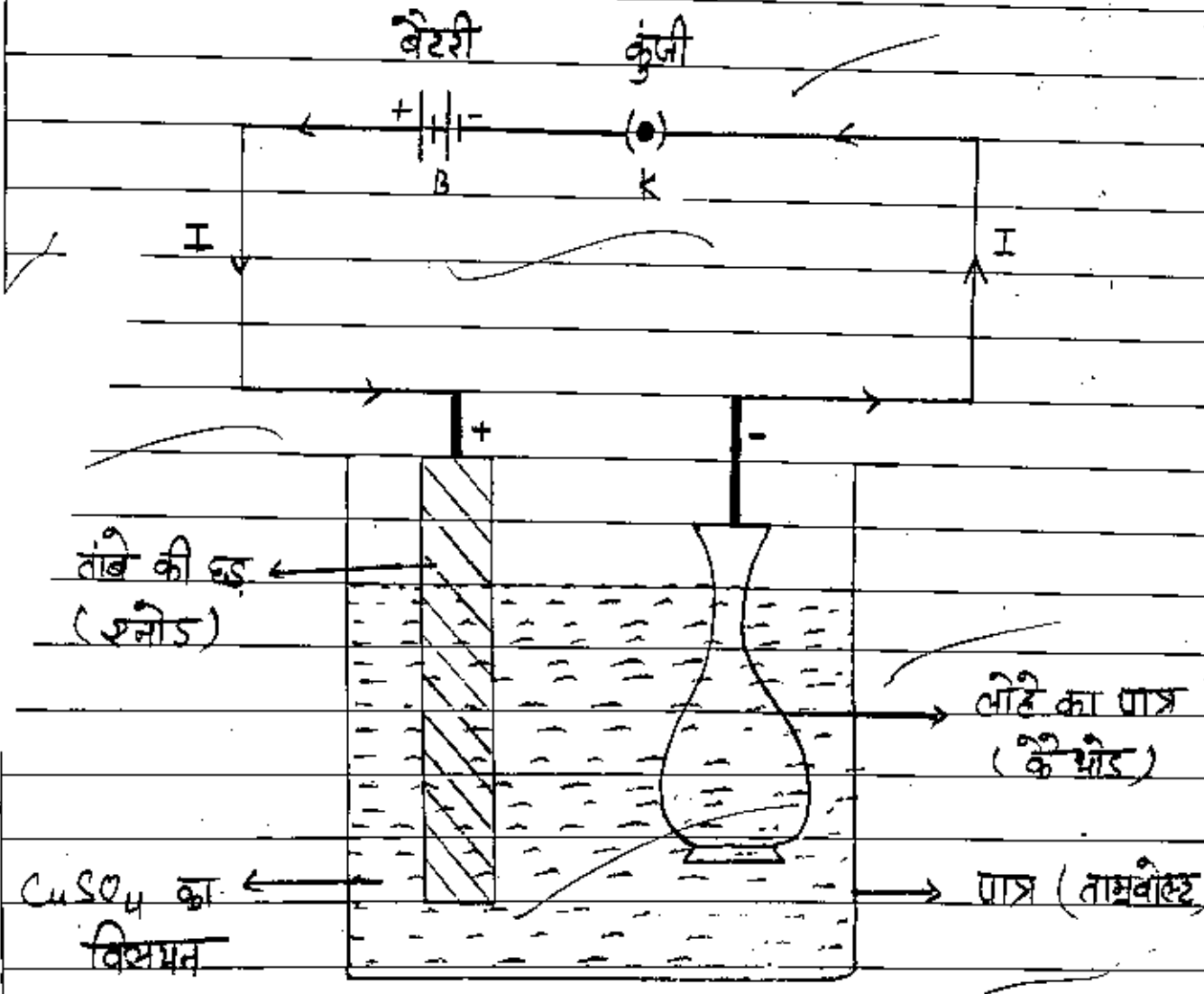
अब, लोहे के पात्र को, जिस

S
E
M
P



पर फुलर्ड (लिपन) करनी है, उसे अच्छी तरह साफ करके पात्र में कैथोड की जगह लगा देते हैं। फिर शुद्ध ताँबे की छड़ को, जिसका लिपन करना है, उसे एनोड के स्थान पर लगा देते हैं। अब उन्हें संधीजी तार के द्वारा बैटरी जोड़ कर विद्युत धारा प्रवाहित करते हैं। विद्युत अपघटन के फलस्वरूप ताँबे की छड़ (एनोड पर रखी हुई) घुलने लगती है और उसकी एक समान प्रती परत लीटने के पात्र पर चढ़ जाती है।

B
S
E
M
P





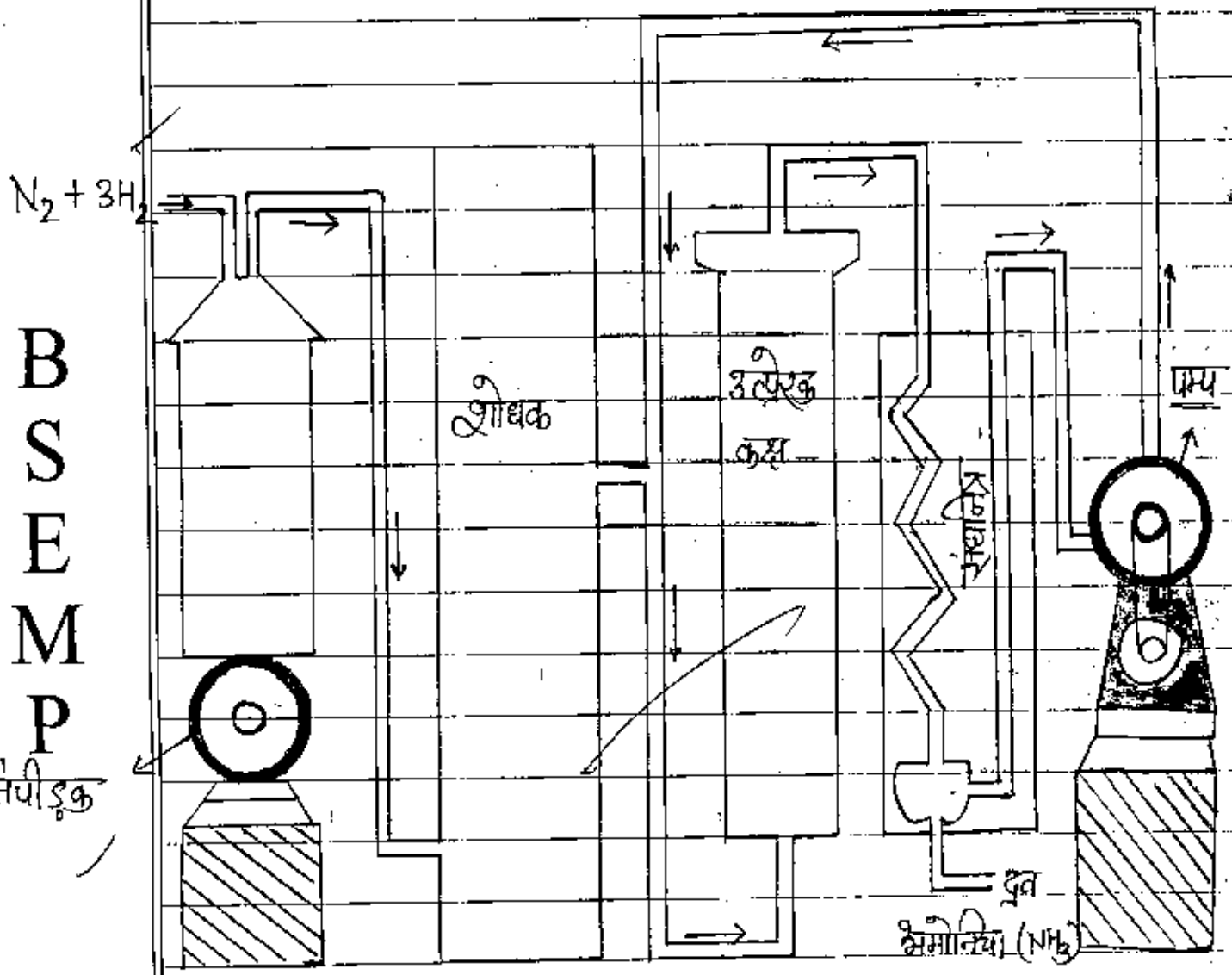
प्रश्न क्रमांक - I

अमोनिया निर्माण की हैबर विधि :-

(i)

नामांकित चित्र :- अपरिवर्तित N_2 व H_2 ✓

B
S
E
M
P
संघी ड्रक



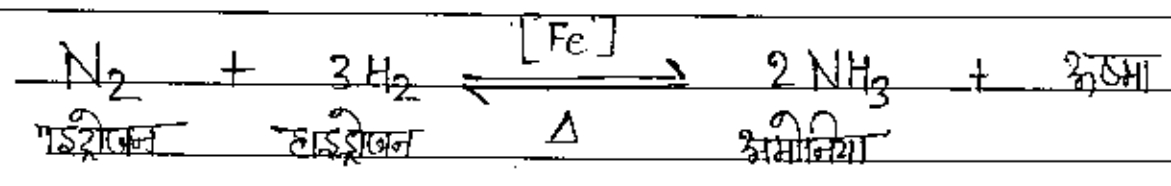
पृष्ठ के अंको का योग

(ii) अमोनिया संश्लिप्त वर्णन :- शुष्क हाइड्रोजन एवं शुष्क नाइट्रोजन को 200 से 300 वायुमंडलीय दाब पर 450°C से 500°C तक गर्म किया जाता है। अमोनिया में लौहा (Fe) उत्प्रेरक



की तरह तथा मीलिब्डनम (Mo) उत्प्रेरक व धीरे की तरह कार्य कर करता है। जिससे अमोनिया बनती है।

(iii) समीकरण :- नाइट्रोजन व हाइड्रोजन को 1:3 के अनुपात में मिलाकर अमोनिया जैसे बनती है। :-



(iv) दो उपयोग :-

- (1) प्रशीतक एवं प्रयोगशाला अभिकर्मक के रूप में।
- (2) यूरिया, उर्वरक, रेयॉन, मोसादर आदि के निर्माण में।

B
S
E
M
P

20

+



=



पृष्ठ 20 के अंक

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

21

□ + □ =

पृष्ठ 21 के अंक

कुल अंक

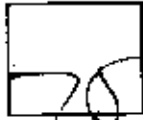



B
S
E
M
P


□

पृष्ठ के अंकों का योग

22

 +

 =





योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 22 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

23

75

+

—

=

598

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 23 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M
P

—

पृष्ठ के अंकों का योग

24

75

+

—

=

75

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

~~Handwritten scribbles and a large diagonal line across the page.~~